ई–पत्रिका

खण्ड 2 अंक 3 अक्तूबर–दिसम्बर, 2025

राज्य स्तरीय मधुमक्खी पालन संगोष्ठी

राष्ट्रीय मधु बोर्ड (छठठ) द्वारा वित्तपोषित दो दिवसीय राज्य स्तरीय मधुमक्खी पालन संगोष्ठी का आयोजन कीट विज्ञान विभाग द्वारा किया गया जिसमें हिमाचल प्रदेश के सभी जिलों से लगभग 250 किसान एवं मधुमक्खी पालक शामिल हुए। इस कार्यक्रम में कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल एवं भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग में उद्यान आयुक्त और राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (NBHM) के मिशन निदेशक डॉ. प्रभात कुमार ने भाग लिया।

संगोष्ठी में विशेषज्ञों ने शहद की ट्रेसेबिलिटी सुनिश्चित करना उसके प्रति उपभोक्ताओं के विश्वास और साख को बनाए रखने के लिए कदम उठाने की बात की। किसानों को अपनी मधुमक्खी कॉलोनियों का पंजीकरण 'मधु क्रांति पोर्टल' पर करवाने के बारे में जानकारी दी गई।

राष्ट्रीय मधु बोर्ड परियोजना के तहत मधुमक्खी पालकों की क्षमता निर्माण प्रमुख उद्देश्य है। विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों और अनुसंधान केंद्रों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिनमें स्वयं सहायता समूहों को भी शामिल किया गया है। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों ने शहद उत्पादन एवं परागण हेतु मधुमक्खी पालन, गुणवत्तापूर्ण शहद उत्पादन एवं निर्यात, शहद की गुणवत्ता मापदंड, सरकारी पहलें तथा आधुनिक उपकरणों के उपयोग जैसे विषयों पर व्याख्यान दिए। प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के *एपिस मेलिफेरा* और *एपिस सेराना* एपायरियों, शहद प्रसंस्करण इकाई, शहद गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशाला और मॉडल प्राकृतिक फार्मों का भ्रमण करवाया गया।

विश्वविद्यालय वर्तमान में हिमाचल प्रदेश में सतत् उच्च–पहाड़ी मधुमक्खी पालन हेतु शहद एवं अन्य मधुमक्खी उत्पाद उत्पादन मॉडल शीर्षक परियोजना कार्यान्वित कर रहा है, जिसे राष्ट्रीय मधु बोर्ड द्वारा वित्तपोषित किया गया है। इस परियोजना के अंतर्गत *एपिस सेराना* के संरक्षण हेतु मिट्टी के छत्ते विश्वविद्यालय के पाँच अनुसंधान केंद्रों में स्थापित किए गए हैं। साथ ही किसानों, बागवानों और प्रशिक्षुओं को इन छत्तों के निर्माण एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण भी प्रदान किए जा रहे हैं।

विस्तार शिक्षा निदेशालय
डॉ. यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी–सोलन, हिमाचल प्रदेश

बागवानी सम्बन्धित कार्यसारणी

ऊँचाई वाले क्षेत्रों में सेब और नाशपाती की तुड़ाई का कार्य आरम्भ करें। बागीचों में रेखाँकन का कार्य पूरा करें तथा पौधा लगाने से लगभग एक माह पहले 1x1x1 मीटर के गड्ढे खोद लें ताकि मिट्टी में मिले उर्वरक तथा खाद पौधों को पर्याप्त मात्रा में उपल्बध हो सके तथा मिट्टी अपने स्थल पर ठीक से बैठ जाये। गड्ढा खोदते समय ऊपरी आधी सतह की मिट्टी और निचली सतह की मिट्टी को अलग–अलग रखें जिसे 10–12 दिन तक खुली धूप में छोड़ दें ताकि इससे हानिकारक जीवाणु तथा कीड़े नष्ट हो जाएं। गड्ढा भरते समय उपरी सतह की मिट्टी में 20–30 किलोग्राम गली सड़ी गोबर की खाद मिलाकर गड्ढे में नीचे भरें तथा निचली सतह में भी 20 किलोग्राम गोबर की खाद मिलाकर उसे गड्ढे के ऊपर भरें साथ ही उसमें आधा किलोग्राम सुपर फॉस्फेट व कीटनाशक आदि मिलाकर भूमि से 15 से 20 सेंटीमीटर ऊपर तक भरें। पतझड़ शुरू होते ही 10 कि.ग्रा. यूरिया का 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें ताकि पौधों के पत्ते 7–10 दिनों में झड़ जाएं व पौधा सुसुप्तावस्था में आ जाये व शीतकालीन कार्यों के लिए तैयार हो सके। गिरी हुई पत्तियों को ईकट्ठा कर गोबर के साथ गड्ढों में डाल दें। शीतोष्ण फल अखरोट, पीकननट्, परसीमन और कीवी तथा सदाबहार फल जैसे मौसम्मी और माल्टा की अगेती किस्में व चकोतरा की तुड़ाई आरम्भ कर लें। शीतोष्ण फल पौधों के तनों में 2–3 फुट तक चूने का लेप लगायें। चूने के लेप के लिए 30 कि. ग्राम चूना + 500 ग्राम नीला थोथा + 500 मि.ली. अलसी के तेल का मिश्रण 100 लीटर पानी में मिलाकर उपयोग करें। नमी वाले स्थानों में तौलियों की खुदाई का कार्य शुरू करें तथा मिट्टी विश्लेषण के लिए मिट्टी के नमूने को इकट्ठा कर प्रयोगशाला में भेजें। समय–समय पर खरपतवार निकालते रहें तथा सिंचाई करें।

गली–सड़ी गोबर की खाद व उर्वरक का उपयोग पौधों की आयु अनुसार करें। पौधों का सुसुप्तावस्था में जाने के बाद काट–छांट व सिधाई का कार्य आरम्भ करें तथा कटे भाग पर बोर्डो पेस्ट या चौबाटिया पेस्ट का लेप लगाएँ। बागीचों से काट–छांट की गई शाखाऐं इक्ट्ठी करें तथा झाड़ियां आदि को निकाल कर बागीचों को साफ रखें। फल पौधों की नर्सरी उत्पादन के लिए सेब, आड़ू, चूली, कैंथ, किवी अखरोट, व पीकान के बीजों को स्ट्रैटीफिकेशन के लिए डालें। नर्सरी से पौधों को निकालने का कार्य शुरू करें।

सदाबहार फलों में किन्नू को छोड़कर संतरा, माल्टा, चकोतरा आदि फलों का तुड़ान करें तथा नर्सरी पौधों को पाले से बचाने के लिए घास, पत्तों आदि की छान बनाकर ढक लें । पाला पड़ने की सम्भावना में सिंचाई करें। सुखा पड़ने की अवस्था में भी सिंचाई करना जरूरी है तथा रोग व कीटग्रस्त शाखाओं को काट–छांट कर के निकाल दें तथा कटे भाग पर बोर्डो पेस्ट लगाएं।

किवी के फलों का अक्तूबर के दूसरे पखवाड़े में तुड़ान आरम्भ करें। यह कार्य नवम्बर के प्रथम पखवाड़े तक पूर कर लें। दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े में थावला बनाएं। खाद व उर्वरक अनुमोदित मात्रा में डालें व काट–छांट का कार्य अनुमोदित विधि द्वारा आरम्भ करें।

सब्जी की फसलों की कार्य रूपरेखा

पछेती फूलगोभी (पूसा स्नोवॉल–1 और के–1) की नर्सरी में उपचारित बीज से बीजाई करें तथा तैयार पनीरी का 60×4.5 सैं.मी. की दूरी पर रोपण करें। बन्दगोभी (प्राइड ऑफ इण्डिया तथा गोल्डन एकड़) व गांठगोभी की नर्सरी डालें तथा पनीरी खेतों में लगायें। गाजर, मूली, शलगम, मेथी तथा पालक की बीजाई 30×10 सैं.मी. पर करें। मटर की मध्य ऋतु की किस्मों की बुआई 60×7.5 सैं.मी. पर करें। प्याज (नासिक रैड) की नर्सरी तैयार करें और तैयार पनीरी को खेतों में 15×10 सैं.मी. की

गाजर किस्म सोलन रचना

दूरी पर लगायें। अनुमोदित खाद की मात्रा डालें। आवश्यकता पड़ने पर सिंचाई तथा गुड़ाई करें। अदरक जमीन से निकालने के पश्चात रोगरहित गट्ठियों का उपचार मैन्कोजेब 250 ग्रा./100 लीटर पानी के घोल में 60 मिनट तक डुबोकर करें तथा छांव में सुखाने के पश्चात भण्डारण करें।

फूलों में होने वाले कार्य

अक्तूबर

- ग्लेडियोलस के कन्दों की बुआई– कम पहाड़ी क्षेत्रों में।
- सर्दियों वाले मौसमी फूलों की पौध तैयार करना और पौधरोपण करना।
- कारनेशन का प्रर्वधन।
- गुलदाऊदी में झाम्बे लगाना तथा शाखाओं को हटाना।
- गुलदाऊदी के फूलों की तुड़ाई व कटाई।

नवम्बर

- कारनेशन का प्रर्वधन।
- गुलदाउदी के फूलों की कटाई।
- गुलाब का पौधरोपण– मध्य व कम पहाड़ी क्षेत्रों में।
- लिलियम, डैफोडिल और ट्यूलिप के कन्दों की बुआई।
- सर्दियों वाले मौसमी फूलों की पौध तैयार करना और पौध रोपण करना।
- वार्षिक फूलों में खाद पानी तथा आवश्यकतानुसार पिचिंग करना।

दिसम्बर

- कारनेशन का प्रर्वधन।
- गुलाब की प्रूनिंग व प्रर्वधन।
- लिलियम के कन्दों की बुआई।

फल–सब्जी परिरक्षण हेतु कार्य

अक्तूबर एवं नवम्बर के महीने में सेब का रस और गूदा निकाल कर परिरक्षित कर लें। सेब से कैंडी, जैम एवं पापड़ बनाकर रख लें। जापानी फलों से भी पापड़ तैयार करें। कीवी के फलों से पेय पदार्थ जैसे की स्क्वैश, मसालेदार स्क्वैश एवं आरटीएस तैयार करें। इसके अलावा कीवी का उपयोग कैंडी एवं पापड़ बनाने मे भी किया जा

सकता है। पपीते से चटनी और जैम बनाएं। अनार से विभिन्न पेय पदार्थ और जंगली अनार से अनारदाना बनायें। पत्थरनाख से कैंडी बनायें। अंगूर का रस, नेक्टर, स्क्वैश एवं अंगूरी इत्यादि पेय पदार्थ बना लें।

नवम्बर एवं दिसंबर के महीनों में अदरक से कैंडी बनायें। अदरक को सुखाकर उसका पाउडर बनाकर रख लें। गाजर, मूली, गोभी एवं शलगम का मिश्रित अचार बनायें। टमाटर से सॉस और केचप बनाएं। हरी मिर्च का भरवां अचार बनाएं। नीम्बू प्रजातीय फलों की स्क्वैश, ऐपेटाइजर एवं अन्य पेय पदार्थ बनायें। गलगल एवं माल्टा के छिलकों से कैंडी बना लें। मटर के दाने, बंदगोभी, फूलगोभी एवं गाजर इत्यादि को सुखा कर रख लें।

बीज उत्पादन सम्बन्धित कार्य

अक्तूबर

निचले क्षेत्रों में पछेती फूलगोभी (पूसा स्नोबॉल–1, के–1) की नर्सरी में उपचारित बीज से ही बीजाई करें। मूली, शलगम, मेथी एवं पालक की बीजाई 30×10 सैं.मी. की दूरी पर करें। मध्यवर्ती क्षेत्रों में फूलगोभी की पछेती किस्मों के बीज वाली फसल की तैयार पनीरी का 45×30 सैं. मी. की दूरी पर रोपण करें। मटर की मध्य ऋतु की किस्मों की बुआई करें। गैंदे के फूलों की बीज के लिए तुड़ाई करें और भण्डारण करें। निचले एवं मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में एंटिरहिनम, कैलेंडुला, वार्षिक गुलदाउदी, पैंजी, डेज़ी, कैलीफोर्निया पॉपी व स्वीट पी के पौधे लगाएं।

नवम्बर

निचले क्षेत्रों में जनवरी माह में अदरक को जमीन से निकालने के बाद रोग रहित गटिठयों का उपचार डायथेन एम–45 (250 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) के घोल में 60 मिनट तक डुबोकर करें तथा छांव में सुखाने के पश्चात् भण्डारण करें। मटर की अरकल तथा वी एल–7 किस्मों का बीज तैयार करने के लिए इन किस्मों के बीज की बुआई 30×7.5 सै.मी. दूरी पर करें। मध्यवर्ती क्षेत्रों में फूलगोभी तथा बंदगोभी की अक्तूबर में लगाई गई फसलों में नाइट्रोजन खाद की दूसरी मात्रा (7 कि.ग्रा. यूरिया/बीघा) डालें। आवश्यकता पड़ने पर सिंचाई तथा गुड़ाई करें। मध्यवर्ती क्षेत्रों में प्याज की पनीरी की बुआई करें।

दिसम्बर

निचले क्षेत्रों में गाजर तथा मूली की एशियन किस्मों की बीज वाली फसल तैयार करने के लिए चयनित जड़ें खेतों में 60×30 सैं.मी. की दूरी पर लगाएं। मध्यवर्ती क्षेत्रों में मूली व गाजर की बीज वाली फसलों के लिए बढ़िया जड़ों को, शिखर से एक तिहाई तक नीचे से (1/2–1/4) काट कर खेतों में लगाएं। अदरक को जमीन से निकालने के बाद रोगरहित गठ्ठियों को डायथेन एम–45 या मास एम–45 (250 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) के घोल में 60 मिनट तक डुबोकर उपचार के बाद छांव मे सुखा कर भण्डारण करें। मध्यवर्ती क्षेत्रों में अगर नवम्बर माह में रह गया हो तो प्याज की पनीरी की बुआई तुरन्त करें।

फल–सब्जी फसलों के कीट प्रबन्धन सम्बन्धित कार्य

आम के कीटों का प्रबन्धन

मैंगो सिल्लाः यह कीट टहनियों पर गाँठे बनाता है। शिशु फूले हुए बीमों में प्रवेश कर उन्हें सख्त शंकुनुमा गाँठों में बदल देते हैं जिससे नई शाखायें नहीं फूटती और न ही फूल आते हैं।

गाँठ वाली टहनियों को अक्तूबर से फरवरी के दौरान काट दें। अगस्त के अंतिम सप्ताह से शुरू करके 21 दिन के अंतराल पर मिथाइल डैमेटॉन 25 ई सी 200 मि.ली. प्रति 200 ली. पानी के घोल का छिड़काव करें।

जड़– गाँठ सूत्रकृमिः सूत्रकृमि से प्रभावित खेतों में टमाटर और इसके वंश के अन्य पौधे जैसे शिमला मिर्च, लाल मिर्च, बैंगन और आलू आदि की एक फसल लेने के बाद तुरन्त दूसरी फसल न लें व फसल तोड़ने के बाद जड़ों को खेतों से निकाल दें या नष्ट कर दें। रोगग्रस्त क्षेत्रों में 2–3 वर्ष के लिए सूत्रकृमि प्रतिरोधी किस्म एस–120 लगायें।

मौनवंशों का प्रबंधन

अक्तूबर

शीतकालीन प्रबन्धन

- सर्दी पड़ने से पहले कम खुराक वाले मौनवंशों को खुराक दें। यदि पतझड़ में पर्याप्त खुराक इक्ट्ठी कर ली हो तो आवश्यक नहीं होती।
- सर्दियों के लिए पैकिंग देने से पहले मौनवंशों को चीनी और पानी (2:1 अनुपात) का घोल दें।
- सरसों में फूल खिले होते हैं अतः खुराक देने की जरूरत नहीं पड़ती।

नवम्बर से दिसम्बर

पैकिंग देना

- नवम्बर के शुरू में मौनवंश के भीतर मोटी पैकिंग और नवम्बर के अंत या दिसंबर के शुरू में बाहरी पैकिंग दें।
- नवम्बर में बाहरी पैकिंग की जरूरत नहीं पड़ती। कुछ स्थानों पर हल्की भीतरी पैकिंग की जरूरत पड़ सकती है।

शीतकालीन पैकिंग

स्थानांतरण

- विदेशी मधुमक्खी *एपिस मेलिफेरा* के वंशों को नवंबर, दिसबंर के महीनों में जहां पहाड़ों पर मौनचर उपलब्ध नहीं होता, मैदानों में ले जाएं और अप्रैल–मई में जब मक्खियाँ शहद इक्ट्ठा कर लेती हैं, वंशों को वापिस ले जाएं।

पादप रोग सम्बन्धित कार्य

- सेब, नाशपाती व गुठलीदार फलों के गिरे हुए पत्तों को इक्ट्ठा कर लें व एक गड्ढे में 5 प्रतिशत यूरिया डाल दें ताकि पत्ते और गिरी हुई टहनियां जल्दी से गल जाएँ और बीमारी के कीटाणु खत्म हो जाएँ।
- प्रूनिंग के समय गिरी हुई लकड़ियों को इक्ट्ठा कर जला दें।
- प्रूनिंग के बाद बोर्डो मिक्सचर (4:4:50) का स्प्रे करें अथवा बोर्डो पेंट को कटे भाग में लगाएं।
- प्रूनिंग के चाकू को नये पेड़ पर इस्तेमाल करने से पहले स्पिरिट में डुबोएं।
- दिसंबर में सेब और नाशपाती के पेड़ों पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3%) का स्प्रे करें।
- निचले पर्वतीय क्षेत्रों में लहसुन की बिजाई के समय मैंकोजेब (0.25%), कार्बेन्डाजिम (0.1%) के घोल से सिंचाई करें।
- गैंदा व कारनेशन को निचले पर्वतीय क्षेत्रों में लगाने से पूर्व बीज अथवा कट्टिंग्स को मैंकोजेब (0.25%), कार्बेन्डाजिम (0.1%) के घोल से सिंचाई करें।

औषधीय व सुगंधित पौधों से सम्बन्धित कार्य

अक्तूबर के महीने में शरद ऋतु में उगाए जाने वाले औषधीय एवं सुगंधित पौधों जैसे कि बवूना, क्लेरी सेज, अलसी, चंद्रशूर, तिलपुष्पी आदि के बीजों का नर्सरी में बिजाई की जाती है। खेतों की दो–तीन बार जुताई कर कंकड़–पत्थर खरपतवार आदि निकाल कर खेती को समतल बनाना चाहिए और उचित मात्रा में गोबर खाद मिलाकर नर्सरी की क्यारियां तैयार कर लेनी चाहिए।

सुगंधित पौधे जैसे कि जंगली गैंदा, बाम, पुदीना, रोजमेरी, सेज, लेवेन्डर आदि पौधों की कटाई कर उनका आसवन विधि द्वारा सुगंधित तेल निकाला जाता है।

नवम्बर–दिसम्बर के महीनों में औषधीय एवं सुगंधित पौधों की कटाई तथा कंदी–प्रकन्दों की खुदाई की जाती है। कलिहारी के फूलों का हरा रंग हल्के भूरे रंग में बदलने लगे तब सूखे फलों से बीज व छिलका अलग–अलग कर देना चाहिए व उनकी सफाई, छंटाई कर छायादार स्थान पर सुखाना चाहिए।

शतावरी, अश्वगंधा, सुगन्धवाला, कडू, कुटकी, चौरा आदि की जड़ों/कदों/प्रकन्दों की खुदाई कर पानी से धुलाई व सफाई कर आंशिक रूप से छायादार स्थान पर सुखाया जाता है। तुलसी, भृंगराज, कालमेघ, अकरकरा आदि औषधीय पौधों के पंचाग (फल, फूल, तना, पत्ते व जड़ों) की कटाई कर उन्हें छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर आशिक रूप से छायादार स्थान पर सुखाया जाता है।

बीजू/पंचांग/कंदों/प्रकन्दों/जड़ों को सुखाने के पश्चात स्टील के कन्टेनर/बोरियों में नमीहित ठंडे /छायादार स्थान पर भण्डारण किया जाता है।

खेत संचालन/गतिविधियां

- पोषक विश्लेषण के लिए चारे वाले वृक्ष जैसे कि ब्यूल, शहतूत इत्यादि से पत्तियों का संग्रह किया जाता है।
- ब्यूल, बान, अम्लूक, देवदार, चीड़, रई, तोष और कैल इत्यादि जैसी वृक्ष प्रजातियों का बीज संग्रहित करें।
- पॉपलर, विलो अनुसंधान परीक्षणों में निराई–गुड़ाई करें।
- पॉपलर के लिए डीयूएस (DUS) केंद्र पर परियोजना का गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा संग्रह किया जाता है।
- डी यु एस (DUS) प्रशिक्षण के अंतर्गत पॉपलर और विलो के पौधों के पत्तों के विभिन्न गुणों जैसे की लम्बाई, चौड़ाई, आकार, वर्ग इत्यादि का माप लिया जाता है।
- विलो अनुसंधान परीक्षणों में सिंगलिंग की जाती है।
- खरपतवार निकालने का काम मुख्य तौर पर किया जाता है।
- पौधों के तौलिये बना कर उन में गोबर की खाद मिलाई जाती है।
- खेतों की मेढ़ और तोड़ों की सफाई की जाती है।

कृषिवानिकी पौधों में होने वाले कार्य

हिमाचल प्रदेश में विभिन्न कृषि वानिकी वृक्ष प्रजातियां उगाई जाती हैं। सितम्बर से दिसम्बर के महीने में किसानों द्वारा इन प्रजातियों को उगाने और देखभाल के महत्वपूर्ण कार्य किये जाते हैं। इस अवधि में मुख्यतः शीत ऋतु में अंकुरित होने वाली प्रजातियाँ बोई जाती हैं, जैसे देवदार, कन्होर, चीड़, कैल, सफेदा, सिल्वर ओक, खिड़क आदि की बुआई की जाती है । बीजों को गर्म पानी और ठंडे

पानी या रासायनिक पदार्थों (H_2SO_4, KNO_3) से उपचारित किया जाता है ताकि अंकुरण बेहतर हो सके। हार्ड–कोटेड बीजों को स्कारिफिकेशन की प्रक्रिया से गुजारा जाता है। बीज बोने के बाद हल्की मिट्टी या बालू से ढक दिया जाता है और सिंचाई की जाती है। नवांकुरों को तीव्र धूप और ठंड से बचाने के लिए शेड नेट या छाया संरचना लगाई जानी चाहिए। खरपतवार समय– समय पर हटाए जाएँ ताकि पौधों को पर्याप्त पोषण और स्थान मिल सके। फफूंदनाशी या कीटनाशी का छिड़काव आवश्यकता अनुसार किया जाना चाहिए। हिमाचल प्रदेश में कई प्रकार की कृषि वानिकी प्रणालियाँ किसानो द्वारा उपयोग में लायी गयी हैं, इन प्रणालियों में किसान सब्जी, औषधीय और सुगंधित पौधों की अंतर फसल उगा सकते हैं । सब्जी में मुख्यतः लहसून, मटर, गोभी, प्याज, मूली, मेथी और सरसों आदि उगा सकते हैं। औषधीय और सुगंधित पौधों में अलसी, हलूं, बबुना, मिल्क थिसल आदि की अंतर फसल उगा सकते हैं। इस अवधी में पशुपालकों को अपने पशुओं की विशेष देखभाल करनी चाहिए। इस समय में सर्दियों के लिए सूखा चारा या सिलेज तैयार करें। पशुओं को नियमित रूप से संतुलित आहार और खनिज मिश्रण दें।

मौसम आधारित कृषि सलाह

- किसानों को कृषि उत्पादन और आय बढ़ाने के लिए मौसम पूर्वानुमान आधारित कृषि सलाहकार सेवाओं का पालन करने की सलाह दी जाती है।
- सभी खरपतवार को बगीचों/खेतों से हटा दें और इसका उपयोग कम्पोस्ट खाद बनाने के लिए करें।
- रबी सीजन की फसलों की बुआई के लिए खेत की तैयारी शुरू करें।
- बागवानों को सलाह दी जाती है कि वे दिसंबर–जनवरी महीनों के दौरान उचित छंटाई प्रथाओं का पालन करें और काटी गई लकड़ी को न जलाएं, इसे छोटे टुकड़ों में काटकर मल्चिंग और खाद बनाने के लिए उपयोग करें।
- किसानों को बदलती जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल एकीकृत खेती अपनाने की भी सलाह दी जाती है।
- कम लागत वाले पॉली–लाइनिंग तालाबों के माध्यम से वर्षा जल संचयन करें और ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी कुशल सिंचाई पद्धतियों का उपयोग करें।

कम लागत वाली पॉली–लाईनिंग तालाब

प्रकाशकः विस्तार शिक्षा निदेशालय, डॉ. यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी-सोलन, हि. प्र.
दूरभाष/ 01792 252706, 252426, ई मेलः dext@yspuniversity.ac.in
www.yspuniversity.ac.in

सोशल मीडिया में विश्वविद्यालय को फौलो करें